रविवार 22 नवंबर, 2026

विषय — आत्मा और शरीर

स्वर्ण पाठ: अय्यूब 33: 4

"मुझे ईश्वर की आत्मा ने बनाया है, और सर्वशक्तिमान की सांस से मुझे जीवन मिलता है।"

उत्तरदायी अध्ययन: यूहन्ना 1: 1, 4, 14, 18

मत्ती 6: 9-13

1 सेआदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।
4 उस में जीवन था; और वह जीवन मुनष्यों की ज्योति थी।
14 और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उस की ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।
18 परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा, एकलौता पुत्र जो पिता की गोद में हैं, उसी ने उसे प्रगट किया॥
9 सो तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो; “हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है; तेरा नाम पवित्र माना जाए।
10 तेरा राज्य आए; तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।
11 हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे।
12 और जिस प्रकार हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर।
13 और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा; क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं। आमीन।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. लूका 4: 14 (से:), 16-21, 33-35, 38-41, 44

14 फिर यीशु आत्मा की सामर्थ से भरा हुआ गलील को लौटा,
16 और वह नासरत में आया; जहां पाला पोसा गया था; और अपनी रीति के अनुसार सब्त के दिन आराधनालय में जा कर पढ़ने के लिये खड़ा हुआ।
17 यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक उसे दी गई, और उस ने पुस्तक खोलकर, वह जगह निकाली जहां यह लिखा था।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

18 कि प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिये कि उस ने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक
किया है, और मुझे इसलिये भेजा है, कि बन्धुओं को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने का सुसमाचार
प्रचार करूं और कुचले हुओं को छुड़ाऊं।
19 और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूं।
20 तब उस ने पुस्तक बन्द करके सेवक के हाथ में दे दी, और बैठ गया: और आराधनालय के सब लोगों की
आंख उस पर लगी थीं।
21 तब वह उन से कहने लगा, कि आज ही यह लेख तुम्हारे साम्हने पूरा हुआ है।
33 आराधनालय में एक मनुष्य था, जिस में अशुद्ध आत्मा थी।
34 वह ऊंचे शब्द से चिल्ला उठा, हे यीशु नासरी, हमें तुझ से क्या काम? क्या तू हमें नाश करने आया है? मैं
तुझे जानता हूं तू कौन है? तू परमेश्वर का पवित्र जन है।
35 यीशु ने उसे डांटकर कहा, चुप रह: और उस में से निकल जा: तब दुष्टात्मा उसे बीच में पटककर बिना हानि
पहुंचाए उस में से निकल गई।
38 वह आराधनालय में से उठकर शमौन के घर में गया और शमौन की सास को ज्वर चढ़ा हुआ था, और
उन्होंने उसके लिये उस से बिनती की।
39 उस ने उसके निकट खड़े होकर ज्वर को डांटा और वह उस पर से उतर गया और वह तुरन्त उठकर उन की
सेवा टहल करने लगी॥
40 सूरज डूबते समय जिन जिन के यहां लोग नाना प्रकार की बीमारियों में पड़े हुए थे, वे सब उन्हें उसके पास
ले आए, और उस ने एक एक पर हाथ रखकर उन्हें चंगा किया।
41 और दुष्टात्मा चिल्लाती और यह कहती हुई कि तू परमेश्वर का पुत्र है, बहुतों में से निकल गईं पर वह उन्हें
डांटता और बोलने नहीं देता था, क्योंकि वे जानते थे, कि यह मसीह है॥
44 और वह गलील के अराधनालयों में प्रचार करता रहा॥

2. मत्ती 12: 22, 23 (से *1st* ,), 24-29, 31, 32, 35

22 तब लोग एक अन्धे-गूंगे को जिस में दुष्टात्मा थी, उसके पास लाए; और उस ने उसे अच्छा किया; और वह
गूंगा बोलने और देखने लगा।
23 इस पर सब लोग चकित होकर कहने लगे, यह क्या दाऊद की सन्तान का है?
24 परन्तु फरीसियों ने यह सुनकर कहा, यह तो दुष्टात्माओं के सरदार शैतान की सहायता के बिना दुष्टात्माओं
को नहीं निकालता।
25 उस ने उन के मन की बात जानकर उन से कहा; जिस किसी राज्य में फूट होती है, वह उजड़ जाता है, और
कोई नगर या घराना जिस में फूट होती है, बना न रहेगा।
26 और यदि शैतान ही शैतान को निकाले, तो वह अपना ही विरोधी हो गया है; फिर उसका राज्य क्योंकर बना
रहेगा?
27 भला, यदि मैं शैतान की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो तुम्हारे वंश किस की सहायता से
निकालते हैं? इसलिये वे ही तुम्हारा न्याय चुकाएंगे।
28 पर यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे
पास आ पहुंचा है।

29 या क्योंकर कोई मनुष्य किसी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल लूट सकता है जब तक कि पहिले उस बलवन्त को न बान्ध ले और तब वह उसका घर लूट लेगा।
31 सलिये मैं तुम से कहता हूं, कि मनुष्य का सब प्रकार का पाप और निन्दा क्षमा की जाएगी, पर आत्मा की निन्दा क्षमा न की जाएगी।
32 जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई बात कहेगा, उसका यह अपराध क्षमा किया जाएगा, परन्तु जो कोई पवित्र-आत्मा के विरोध में कुछ कहेगा, उसका अपराध न तो इस लोक में और न पर लोक में क्षमा किया जाएगा।
35 भला, मनुष्य मन के भले भण्डार से भली बातें निकालता है; और बुरा मनुष्य बुरे भण्डार से बुरी बातें निकालता है।

3. यूहन्ना 2: 13-16, 18-22

13 यहूदियों का फसह का पर्व निकट था और यीशु यरूशलेम को गया।
14 और उस ने मन्दिर में बैल और भेड़ और कबूतर के बेचने वालों ओर सर्राफों को बैठे हुए पाया।
15 और रस्सियों का को ड़ा बनाकर, सब भेड़ों और बैलों को मन्दिर से निकाल दिया, और सर्राफों के पैसे बिथरा दिए, और पीढ़ों को उलट दिया।
16 और कबूतर बेचने वालों से कहा; इन्हें यहां से ले जाओ: मेरे पिता के भवन को व्यापार का घर मत बनाओ।
18 इस पर यहूदियों ने उस से कहा, तू जो यह करता है तो हमें कौन सा चिन्ह दिखाता है?
19 यीशु ने उन को उत्तर दिया; कि इस मन्दिर को ढा दो, और मैं उसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा।
20 यहूदियों ने कहा; इस मन्दिर के बनाने में छियालीस वर्ष लगे हें, और क्या तू उसे तीन दिन में खड़ा कर देगा?
21 परन्तु उस ने अपनी देह के मन्दिर के विषय में कहा था।
22 सो जब वह मुर्दों में से जी उठा तो उसके चेलों को स्मरण आया, कि उस ने यह कहा था; और उन्होंने पवित्र शास्त्र और उस वचन की जो यीशु ने कहा था, प्रतीति की॥

4. यूहन्ना 10: 24-30

24 तब यहूदियों ने उसे आ घेरा और पूछा, तू हमारे मन को कब तक दुविधा में रखेगा? यदि तू मसीह है, तो हम से साफ कह दे।
25 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, कि मैं ने तुम से कह दिया, और तुम प्रतीति करते ही नहीं, जो काम मैं अपने पिता के नाम से करता हूं वे ही मेरे गवाह हैं।
26 परन्तु तुम इसलिये प्रतीति नहीं करते, कि मेरी भेड़ों में से नहीं हो।
27 मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूं, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं।
28 और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूं, और वे कभी नाश न होंगी, और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा।
29 मेरा पिता, जिस ने उन्हें मुझ को दिया है, सब से बड़ा है, और कोई उन्हें पिता के हाथ से छीन नहीं सकता।
30 मैं और पिता एक हैं।

विज्ञान और स्वास्थ्य

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

1. **586: 9 (पिता)-10**

पश्चाताप, आध्यात्मिक बपतिस्मा, और उत्थान के माध्यम से, नश्वर अपने भौतिक विश्वासों और झूठी व्यक्तित्व को बंद कर देते हैं। यह केवल समय का सवाल है "कि छोटे से ले कर बड़े तक, सब के सब मेरा ज्ञान रखेंगे।" पदार्थ के दावों से इंकार आत्मा की खुशियों की ओर, मानव स्वतंत्रता और शरीर पर अंतिम विजय की ओर एक बड़ा कदम है।

2. **595: 7 (मंदिर)-10**

मंदिर। शरीर; जीवन, पदार्थ और बुद्धि का विचार; सत्य की अधिरचना; प्रेम का तीर्थ; एक भौतिक ढांचा, जहां नश्वर लोग पूजा-अर्चना के लिए एकत्र होते हैं।

3. **243: 32-6**

भगवान जितना अच्छा है और सभी का स्रोत है, वह नैतिक या शारीरिक विकृति उत्पन्न नहीं करता है, लेकिन इस तरह की विकृति वास्तविक नहीं है, लेकिन भ्रम है, त्रुटि का मतिभ्रम। दिव्य विज्ञान इन भव्य तथ्यों का खुलासा करता है। किसी भी रूप में कभी भी डरने या न मानने की गलती से, उनके आधार पर यीशु ने जीवन का प्रदर्शन किया।

4. **249: 14-19**

ईश्वर अनंत है; अनंतता न कभी शुरू हुई थी, न कभी खत्म होगी, और इसमें ईश्वर से भिन्न कुछ भी शामिल नहीं है। तो फिर, यह प्राणहीन पदार्थ कहाँ से आया?

जीवन, मसीह की तरह है, "वही कल, और आज, और हमेशा के लिए।"

5. **400: 30-4**

पवित्र शास्त्र स्पष्ट रूप से शरीर पर पापपूर्ण विचारों के हानिकारक प्रभाव की घोषणा करता है। हमारे गुरुदेव को भी यह महसूस हुआ। यह दर्ज है कि कुछ स्थानों पर उसने कई महान कार्य नहीं किये, क्योंकि वहां के लोग सत्य पर विश्वास नहीं करते थे। कोई भी मानवीय भूल उसकी अपनी शत्रु है, तथा स्वयं के विरुद्ध कार्य करती है; वह सही दिशा में कुछ नहीं करती, तथा गलत दिशा में बहुत कुछ करती है।

6. **119: 25-1**

सूर्योदय को देखने में, कोई पाता है कि यह इंद्रियों के सामने सबूतों का खंडन करता है कि यह विश्वास है कि पृथ्वी गति में है और सूर्य आराम के लिए है। चूंकि खगोल विज्ञान सौर प्रणाली के आंदोलन की मानवीय धारणा को उलट देता है, इसलिए ईसाई विज्ञान आत्मा और शरीर के प्रतीत होने वाले संबंध को उलट देता है और शरीर को मन की सहायक बनाता है। इस प्रकार यह मनुष्य के साथ है, जो संयमशील मन का विनम्र सेवक है, हालांकि यह समझदारी को अन्यथा प्रकट करता है।

7. **269: 21-28**

भौतिक इंद्रियों की गवाही न तो पूर्ण है और न ही दिव्य है। इसलिए मैं अपने आप को यीशु के उपदेशों पर, भविष्यद्वक्ताओं के, और मन के विज्ञान की गवाही पर अनारक्षित रूप से रोपित करता हूं। अन्य नींव वहाँ कोई नहीं हैं। अन्य सभी प्रणालियाँ - सिस्टम पूर्ण रूप से या आंशिक रूप से ज्ञान के आधार पर भौतिक इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त की जाती हैं - हवा से हिलती हुई चट्टानें हैं, न कि चट्टान पर बने मकान।

8. 494: 2-9, 15 (यह)-19

यीशु कहा:"कि इस मन्दिर [शरीर] को ढा दो, और मैं [मन] उसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा;" और उन्होंने ऐसा थकी हुई मानवता को आश्वस्त करने के लिए किया।

क्या यह विश्वास करना बेवफाई की प्रजाति नहीं है कि मसीहा के रूप में इतना महान कार्य स्वयं या ईश्वर के लिए किया गया था, जिसे यीशु के उदाहरण से अनन्त सद्भाव को बनाए रखने के लिए किसी सहायता की आवश्यकता नहीं थी? लेकिन नश्वर लोगों को इस मदद की ज़रूरत थी, और यीशु ने उनके लिए रास्ता बताया।

कृपा का चमत्कार प्रेम का कोई चमत्कार नहीं है। यीशु ने शारीरिक शक्ति के साथ-साथ आत्मा की असीम क्षमता की अक्षमता का प्रदर्शन किया, इस प्रकार मानव भावना को अपने स्वयं के दोषों से भागने में मदद करने और दिव्य विज्ञान में सुरक्षा की तलाश करने के लिए।

9. 350: 24 (“यह)-30

"और वचन देहधारी हुआ।" अस्तित्व के विज्ञान को सिद्ध करने से पहले, दिव्य सत्य को शरीर और मन पर पड़ने वाले उसके प्रभावों के माध्यम से जाना जाना चाहिए। इसलिए, इसका साकार रूप यीशु में देखने को मिलता है — वह जीवन-कड़ी जो एक ऐसा संबंध बनाती है जिसके माध्यम से वास्तविक तक अवास्तविक पहुँचता है, आत्मा इंद्रियों को धिक्कारती है, और सत्य असत्य को नष्ट कर देता है।

10. 399: 29-8

हमारे मास्टर ने पूछा: "कोई मजबूत आदमी के घर में कैसे घुस सकता है और अपना माल खराब कर सकता है, सिवाय इसके कि वह पहले मजबूत आदमी को बांध दे?" दूसरे शब्दों में: तथाकथित नश्वर दिमाग से शुरुआत किए बिना, मैं शरीर को कैसे ठीक कर सकता हूं, जो सीधे शरीर को नियंत्रित करता है? जब इस तथाकथित मन में बीमारी एक बार नष्ट हो जाती है, तो बीमारी का डर दूर हो जाता है, और इसलिए रोग पूरी तरह से ठीक हो जाता है। नश्वर मन "मजबूत आदमी" है, जिसे स्वास्थ्य और नैतिकता पर इसके प्रभाव से पहले अधीनता में आयोजित किया जाना चाहिए। इस त्रुटि पर विजय प्राप्त की, हम उसके माल के "मजबूत आदमी" को समाप्त कर सकते हैं, - अर्थात् पाप और बीमारी।

11. 403: 14-20

आप स्थिति को आज्ञा देते हैं यदि आप समझते हैं कि नश्वर अस्तित्व आत्म-धोखे की स्थिति है न कि सत्य होने की। नश्वर मन लगातार नश्वर शरीर पर गलत विचारों के परिणाम उत्पन्न कर रहा है; और यह तब तक करना जारी रखेगा, जब तक कि नश्वर त्रुटि सत्य द्वारा अपनी काल्पनिक शक्तियों से वंचित न हो, जो नश्वर भ्रम के गॉसमेर वेब को मिटा देता है।

12. 207: 15-16

शरीर पहले और आत्मा अंतिम नहीं है, न ही बुराई अच्छाई से अधिक शक्तिशाली है।

13. 241: 27-30

आत्मा का बपतिस्मा, मांस की सभी अशुद्धियों के शरीर को धोना, यह दर्शाता है कि शुद्ध हृदय ईश्वर को देखता है और आध्यात्मिक जीवन और उसके प्रदर्शन के करीब पहुंच रहा है।

14. 428: 8-14

झूठे न्यासों और भौतिक साक्ष्यों के बारे में विचार करने के लिए ताकि आध्यात्मिक तथ्य सामने आ सकें — यह महान प्राप्ति है जिसके माध्यम से हम असत्य को मिटा देंगे और सत्य को स्थान देंगे। इस प्रकार हम मंदिर, या देह को सच में स्थापित कर सकते हैं, "जिसका निर्माता और निर्माता भगवान है।"

15. 16: 20-15

जैसे ही हम सभी भौतिक संवेदना और पाप से ऊपर उठते हैं, क्या हम स्वर्ग में जन्मी आकांक्षा और आध्यात्मिक चेतना तक पहुंच सकते हैं, जो कि प्रभु की प्रार्थना में इंगित किया गया है और जो तुरंत बीमार को ठीक करता है।

यहाँ मुझे यह बताने दें कि मैं प्रभु की प्रार्थना का आध्यात्मिक अर्थ क्या समझता हूँ:

हमारे परमपिता जो स्वर्ग में विराजते हैं,
हमारे पिता-माता भगवान, सभी सामंजस्यपूर्ण,

पवित्र हो तेरा नाम।
मनमोहक

तुम्हारा राज्य आओ।
तेरा राज्य आ गया; तू हमेशा मौजूद है।

तुम्हारी इच्छा पृथ्वी में हो, जैसा कि स्वर्ग में है।
जैसा कि स्वर्ग में पृथ्वी पर भी है, हमें यह जानने में सक्षम करें, कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है, सर्वोच्च है।

हमें इस दिन की हमारी रोटी दो;
आज के लिए हमें अनुग्रह दें; कृपया प्रसिद्द स्नेह खिलाएँ;

और हमें हमारे कर्ज माफ कर दो, क्योंकि हम अपने कर्जदारों को माफ करते हैं।
और प्यार प्यार में परिलक्षित होता है;

और हमें प्रलोभन में न ले जाएँ, बल्कि हमें बुराई से बचाएं;

और परमेश्वर हमें प्रलोभन में नहीं ले जाता है, बल्कि हमें पाप, बीमारी और मृत्यु से बचाता है।

क्योंकि राज्य, शक्ति और महिमा सदा के लिए तुम्हारी है।
क्योंकि परमेश्वर अनंत है, सर्व-शक्ति है, सभी जीवन, सत्य, प्रेम, सभी पर शासक है, और सभी में है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठीसुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।